राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उत्तरांचल,उत्तराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रसारीत

सुरत–गुजरात, संस्करण सोमवार, 11मई2020 वर्ष–2, अंक –68 पृष्ठ–04 मूल्य–01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

यूएन ने 6.7 अरब डॉलर जुटाने की वैश्विक मुहिम शुरू की

कोरोना से लडने गरीब देशों की करेंगे मदद

जिनेवा । जानलेवा महामारी कोरोना वायरस से लडने में गरीब देशों की मदद करने का फैसला संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया गया है। इसके ? लिए संयुक्त राष्ट्र और साझेदार एजेंसियों ने 6.7 अरब डॉलर जुटाने की वैश्विक मुहिम शुरू की है। इस मुहिम में विशेष ध्यान बेहद कमजोर एवं अरक्षित देशों और खाद्य असुरक्षा तथा लैंगिक आधार पर होने वाली हिंसा से निपटने पर दिया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र के आपदा राहत समन्वयक मार्क लोकॉक ने 6.7 अरब डॉलर का कोष जुटाने की मुहिम शुरू की और कमजोर एवं अरक्षित देशों में कोविड–19 से लड़ने की वैश्विक योजना को अद्यतन किया।लोकॉक ने कहा कि वायरस ने अब प्रत्येक देश और धरती पर लगभग हर इंसान को प्रभावित किया है, लेकिन इसके सबसे भयावह एवं अस्थिर करने वाले प्रभाव विश्व के सबसे गरीब देशों में देखने को मिलेंगे। 'कोविड–19 वैश्विक मानवीय प्रतिक्रिया योजना' 25 मार्च को शुरू की गई थी लेकिन मानवीय जरूरतें लगातार बढ़ने के चलते 2020 के शेष समय के लिए अद्यतन योजना को 6.7 अरब डॉलर की जरूरत है। योजना में खाद्य असुरक्षा बढ़ने की स्थिति से निपटने के लिए तैयार मूल अपील एवं कार्यक्रमों में शामिल 54 देशों के अलावा नौ कमजोर एवं अरक्षित देशों को जोड़ा गया है। ये नौ अतिरिक्त देश बेनिन, जिबूती, लाइबेरिया, मोजाम्बिक, पाकिस्तान, फिलीपीन, सिएरा लियोन, टोगो और जिम्बाब्वे हैं। संयुक्त राष्ट्र के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने कहा कि आज की अपील खाद्य असुरक्षा पर ज्यादा ध्यान देने के साथ ही अधिक संवेदनशील देशों की मदद कैसे करें और लिंग के आधार पर होने वाली हिंसा, यौन उत्पीड़न एवं दुर्व्यवहार समेत अन्य समस्याओं पर भी ध्यान केंद्रित करेगी। लोकॉक ने अभी कदम न उठाने पर संघर्ष, भुखमरी एवं गरीबी बढ़ने के साथ ही सिर पर मंडराते अकाल के खतरे के प्रति आगाह किया है। अद्यतन योजना संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा मार्च के अंत में तैयार की गई पहली अपील का ही अगला हिस्सा है। पहली अपील में दो अरब डॉलर जुटाने की मांग की गई थी। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने दानदाताओं से ज्यादा समर्थन देने की अपील है ताकि कोरोना वायरस को दुनिया भर के देशों को अपनी चपेट में लेने से रोका जा सके।उन्होंने कहा कि अगर हम सबसे गरीब लोगों– खासकर महिलाओं एवं लड़कियों तथा अन्य संवेदनशील समूहों को समर्थन नहीं देते जो वैश्विक महामारी एवं वैश्विक मंदी के प्रभाव से लड़ रहे हैं, तो हम सबको आने वाले कई साल तक इसके परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। वे इससे ज्यादा दर्दनाक और हर किसी के लिए कहीं ज्यादा महंगे साबित होंगे।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप का दावा, किसी वैक्सीन के चला जाएगा कोरोना वायरस

न्यूयार्क (ईएमएस)। बेबाक व बेतुकी बयानबाजी के लिए मशहूर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने नए दावों को लेकर सुर्खियों में है। अमेरिका में कोरोना से 77 हजार से ज्यादा मौतें होने के बावजूद ट्रंप ने शुक्रवार को दावा किया कि उनका देश महानता की ओर बढ़ रहा है, और कोरोना बिना किसी वैक्सीन के चला जाएगा। ट्रंप का यह बयान उस समय में आया जब अमेरिका में ग्रेट डिप्रेशन के बाद बेरोजगारी दर सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गया है। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, 'यह कोरोना बिना वैक्सीन के ही चला जाएगा। उन्होंने यहां तक दावा किया कि दुनिया में ऐसी और बीमारियां आईं और बिना वैक्सीन खत्म हो गईं। ट्रंप ने कहा,यहां कुछ वायरस और फ्लू हैं जो आए। जब उनके लिए वैक्सीन ढूंढी गई, वैक्सीन नहीं मिली और फिर वायरस गायब हो गए। वे दोबारा नहीं आए।

जब ट्रंप से पूछा कि इस दावों से उनका क्या मतलब है, क्या उनका यह कहना है कि वैक्सीन की जरूरत नहीं है? इस पर ट्रंप ने कहा, 'मैं सिर्फ डॉक्टरों की बात पर भरोसा करता हूं। वे कह रहे हैं कि ऐसा होने वाला है। इसका मतलब यह नहीं कि इसी साल, इसका मतलब यह नहीं कि करोना जा रहा है। लेकिन अंततः वह चला जाएगा। जहां तक वैक्सीन का सवाल है, अगर हमारे पास यह होता तो ज्यादा मददगार साबित होता। दूसरी तरफ कोरोना वायरस टास्क फोर्स की जिम्मेदारी देख रहे डॉक्टर ऐंटनी फॉसी का ट्रंप के दावे के विपरीत बयान आ चुका है। डा.फॉसी ने पिछले सप्ताह कहा था कि जब तक हमारे पास वैक्सीन नहीं आता तब तक कोरोना खत्म नहीं हो पाएगा।

सिंगापुर में मास्क नहीं पहनने पर भारतीय मूल की महिला गिरफ्तार

सिंगापुर (ईएमएस)। सिंगापुर में भारतीय मूल की 40 वर्षीय एक महिला को यहां की एक अदालत में पांच मामलों में आरोपित किया गया जिसमें आपराधिक बल प्रयोग का मामला भी शामिल है। उस पर कोविड–19 से बचाव के लिए मास्क पहनने से इंकार करने और एक पुलिस अधिकारी से दुर्व्यवहार करने का मामला भी है जिसने उसकी पहचान स्थापित करने का प्रयास किया। एक शॉपिंग मॉल में सात मई को हुई इस घटना के बाद कस्तुरी गोविंदसामी रत्नमस्वामी को गिरफ्तार किया गया।

जानकारी के मुता?बिक सिंगापुर निवासी रत्नमस्वामी को घटना के बाद मानसिक स्थिति की जांच के लिए मानसिक स्वास्थ्य संस्थान (आईएमएच) में भर्ती कराया गया है।

उसे शनिवार को अदालत ले जाया गया और पांच मामलों में आरोपित किया गया जिसमें किसी नौकरशाह से गाली–गलौच की भाषा का इस्तेमाल करना और आपराधिक बल प्रयोग करना शामिल है।

आईएमएच में उसके रिमांड के बाद सुनवाई की अगली तारीख 22 मई निर्धारित की गई है। पुलिस के बयान के मुताबिक महिला ने मॉल के कर्मचारी पर हमला किया और एक पुलिस अधिकारी से गाली–गलौच की जिसने उसे ठीक तरीके से मास्क पहनने के लिए कहा।

कोरोना वायरस का संक्रमण 65000 के पार, रविवार को सामने आए 2158 नए संक्रमण

नई दिल्ली (ईएमएस)। देश में कोरोना वायरस के संक्रमण से पीड़ित मरीजों की संख्या बढ़कर 65084 हो गई है। इसमें शनिवार रात 10 बजे तक के आंकड़े शामिल हैं। महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के आंकड़े अपडेट नहीं हैं। देर रात संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़ने की संभावना है।

देश में अब तक इस बीमारी से 2153 लोगों की मौत हो चुकी है। 20351 लोग ठीक हो चुके हैं। महाराष्ट्र के अलावा गुजरात, तमिलनाडु और दिल्ली में कोरोना वायरस संक्रमण तेजी से फैल रहा है। तीनों राज्यों में पीड़ितों की संख्या 6000 से 8195 के बीच है। गुजरात में रविवार को 398 नए मामले सामने आने के साथ पीड़ितों की संख्या 8195 हो गई, जिनमें से 493 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 2545 ठीक भी हो चुके हैं। तमिलनाडु में रविवार को 669 नए मामले सामने आने के बाद पीड़ितों की संख्या 7204 हो गई। इसमें से 45 लोगों की मौत हो गई है, जबकि 1959 ठीक होने में कामयाब रहे हैं। दिल्ली में रविवार को 381 नए मामले सामने आने के बाद पीड़ितों की संख्या 6923 हो गई। इनमें से 73 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 2069 ठीक हो चुके हैं। रविवार को मध्यप्रदेश में भी 157 नए मामले सामने आए और पीड़ितों की संख्या बढ़कर 3614 हो गई। हालांकि इसमें से 1676 की ठीक हो चुके हैं। पश्चिम बंगाल में रविवार को 153 नए मामले सामने आने के बाद पीड़ितों की संख्या 1940 हो गई। इसके अतिरिक्त बाकी राज्यों में रविवार को पीड़ितों की संख्या दहाई के अंक में आई।

जिन 11 राज्यों में कोरोना वायरस का

संक्रमण ज्यादा फैला हुआ है, वहां लगातार अधिक संख्या में पीड़ित सामने आ रहे हैं। देश के अन्य क्षेत्रों में पीड़ितों की संख्या नियंत्रित है। केरल जैसे कुछ राज्यों में ठीक होने वालों की संख्या 90ः से ऊपर पहुंच चुकी है। वहीं बहुत से राज्य ऐसे हैं जहां वर्तमान में कोरोनावायरस का एक भी पीड़ित नहीं है।

कोरोना वायरस का प्रकोप बढ़ने के साथ ही सरकार ने उन क्षेत्रों में ढील देना शुरू कर दिया है, जहां पर कोरोनावायरस के संक्रमण बहुत कम है। इसके अतिरिक्त 12 मई से 15 जोड़ी ट्रेन चलाने का फैसला भी किया गया है। इसे देखते हुए कहा जा सकता है कि अब सरकार लॉक डाउन लंबा खींचने के मूड में नहीं है। सरकार एहतियाती कदम उठाते हुए सभी क्षेत्रों में व्यावसायिक और अन्य गतिविधियां शुरू करने की इजाजत दे सकती है। किंतु महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु और दिल्ली जैसे राज्यों में रेड जोन में पाबंदियां जारी रह सकती हैं।

एयर इंडिया के 5 पायलट और 2 स्टाफ कोरोना पॉजिटिव

–हाल ही में कार्गो विमान लेकर गये थे चीन

मुंबई, (ईएमएस)। कोरोना वायरस का कहर लगातार बढ़ता ही जा रहा है और अब 'महाराजा' यानी एयर इंडिया के पायलट भी कोरोना की चपेट में आ गए हैं. एयर इंडिया के 5 पायलट और 2 स्टाफ कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं. उड़ान भरने से 72 घंटे पहले हुई जांच में इन्हें कोरोना पॉजिटिव पाया गया. ये सभी पायलट मुंबई में हैं और पॉजिटिव पाए जाने के बाद उन्हें उचित मेडिकल निगरानी में रखा गया है. बताया गया है कि शनिवार को 77 पायलट का टेस्ट किया गया था जिसके बाद 5 पायलटों का टेस्ट पॉजिटिव आया था. इसके अलावा 2 और स्टाफ की टेस्ट रिपोर्ट भी कोरोना पॉजिटिव आई है. ऐसे में सभी को क्वारेंटीन कर दिया गया है. एयर इंडिया के सूत्रों ने बताया कि ये पायलट और स्टाफ कार्गो विमान लेकर कुछ दिन पहले ही चीन गए थे. फ़िलहाल ये साफ नहीं हो पाया है कि कोरोना संक्रमित होने का कारण चीन यात्रा ही है या फिर कुछ और. बहरहाल, एयर इंडिया के पांचों पायलट ऐसे समय कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं जब विदेश में फंसे लोगों को लाने के लिए महत्वपूर्ण वंदे भारत मिशन चलाया जा रहा है. वंदे भारत मुहिम को पूरा करने में एयर इंडिया अहम भूमिका निभा रही है. इसके अलावा कोरोना लॉकडाउन के बीच देश के दूर दराज के इलाकों मे जरूरी समान और दवाएं पहुंचाने की जिम्मेदारी भी एयर इंडिया के पायलट निभा रहे हैं.

दिल्ली में 7000 के करीब पहुंचे कोरोना के केस, 381 नए केस

नई दिल्ली (ईएमएस)। दिल्ली में कोरोना वायरस के 381 नए मामले सामने आए और कुल संक्रमितों की संख्या 6924 पर पहुंच गई। दिल्ली सरकार की तरफ से रविवार को जारी आंकड़ों में बताया गया कि यह आंकड़े 08 मई 12:00 बजे से 09 मई 12:00 बजे तक के हैं। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य महानिदेशालय की तरफ से रविवार को जारी आंकड़ों में बताया गया कि 381 नए मामलों से कुल संक्रमित 6923 हो गए, जबकि इस दौरान पांच संक्रमितों की मृत्यु से मरने वालों की संख्या 73 हो गई। राजधानी में फिलहाल कोरोना के सक्रिय मामले 4781 हैं जिसमें 91 आईसीयू और 27 वेंटिलेटर पर हैं। दिल्ली में इस दौरान 49 संक्रमित ठीक हुए और इन्हें मिलाकर 2069 स्वस्थ हुए हैं। दिल्ली में कोरोना संक्रमित 1428 घरों में क्वारंटाइन हैं। अब तक दिल्ली में 93810 लोगों की कोरोना जांच की जा चुकी है। राजधानी में निषिध्द जोनों की संख्या 83 है। राजधानी में 60 वर्ष और इससे अधिक आयु वर्ग में वायरस से मरने वालों की संख्या सर्वाधिक 36 है, जो कुल संक्रमितों का 3।54 प्रतिशत है। इनमें से 33 पहले अन्य बीमारियों से पीड़ित थे। हालांकि, सबसे कम संक्रमित इसी वर्ग के 1017 हैं। कुल संक्रमण प्रभावित में मृतक प्रतिशत 1।05 प्रतिशत है। आंकड़ों के अनुसार, सबसे ज्यादा मामले पचास वर्ष से कम आयु

पानी की बोतल बांधकर पैदल चलने को मजबूर हैं मजदूर

मुंबई । सारे देश में करोड़ों मजदूर लॉक डाउन के दौरान भूख प्यास और बेरोजगारी से बेहाल होकर पैदल ही अपने घरों को निकल पड़े हैं। कई कई दिन इन्हें भूखा रहना पड़ता है। जेब में पैसे नहीं है। पैसे हैं भी तो दुकानें बंद है। दूध नहीं मिल रहा है छोटे छोटे से बच्चे इस कड़ी चिलचिलाती हुई धूप में नंगे पैर चलने के लिए विवश हैं। पैरों में छाले पड़ गए हैं। पैर सूज गए हैं। उसके बाद भी भूखे प्यासे अपनी जिंदगी को बचाने के लिए यह मजदूर रोजाना पैदल चलते हुए अपने घरों की ओर बढ़ रहे हैं। यह दृश्य देखकर भी नेताओं, अधिकारियों, साधु–संतों का दिल क्यों नहीं पसीज रहा है।

पैदल चलते चलते चप्पले टूट गई। दोपहर की तपती गर्मी में पैरों के तलवे में छाले पड़ गए। उसके बाद भी लगातार चलते रहने के लिए लोगों ने पानी की बोतलों को कपड़े या रस्सी से बांधकर उन्हीं के सहारे चलना शुरू कर दिया।

जगह–जगह से जो रिपोर्ट प्राप्त हो रही हैं। उसमें किसी भी राज्य सरकारों द्वारा इन गरीब मजदूरों के लिए खाने पीने या इनके परिवहन की व्यवस्था रास्तों में नहीं की गई है। उल्टे पुलिस डंडे लगाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर खदेड़ रही है। किसी जगह पर अच्छे अधिकारी होते हैं तो वह है इन्हें ट्रकों के माध्यम से आगे कुछ किलोमीटर भेजने की व्यवस्था कर देते हैं। कुछ लोग पानी और भोजन की व्यवस्था करा देते हैं। इन मजदूरों का कहना है, कि रास्ते में स्वयंसेवी संगठन ढाबे वाले अपनी सामर्थ्य के अनुसार मजदूरों को खिला पिला देते हैं। यदि वह नहीं होते, तो हम लोग अभी तक जिंदा भी नहीं होते। कोई भी सरकार कुछ नहीं कर रही है।

यह स्थिति देशभर के हर हिस्से मैं देखने को मिल रही है। दक्षिण के तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र, तेलंगाना से मजदूर उत्तर भारत की ओर पलायन कर रहे हैं। इसी तरीके से महाराष्ट्र के मुंबई नासिक पुणे जैसे शहरों से विभिन्न राज्यों के करोड़ों की संख्या में मजदूर सड़कों पर हैं। यही स्थिति राजस्थान के जयपुर कोटा उदयपुर गुजरात के नासिक बड़ौदा अहमदाबाद मोरबी भावनगर राजकोट, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली से करोड़ों की संख्या में मजदूर पैदल ही अपने राज्यों और घरों की ओर चल पड़े हैं। आश्चर्य की बात यह है कि इन मजदूरों को लेकर कोई भी राज्य सरकारें गंभीर नहीं है। जिन राज्यों से यह मजदूर निकल रहे हैं। उन्हें अन्य राज्य का मानकर कोई भी राज्य सरकार इन मजदूरों को खाने–पीने या परिवहन की सुविधा उपलब्ध नहीं करा रही है। नाही इन्हें रोक पा रही है पहली बार इन मजदूरों ने अपने जीवन में एक ही दिन में कई बार मृत्यु से साक्षात्कार होते देखा है। इस स्थिति की उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

स्लोवेनिया में घोटाले के खिलाफ सड़कों पर उतरे लोग

लुबिलयाना, (ईएमएस)।,स्लोवेनिया की राजधानी लुबिलयाना में हजारों लोग सरकार के घोटालों के खिलाफ सड़कों पर उतर गए हैं। पिछले दिनों सरकार ने मास्क और वेंटिलेटर की खरीदी में भारी घोटाला किया है। घोटाले उजागर होने के बाद आम जनता में काफी नाराजगी है। हजारों लोग प्रधानमंत्री जानेज जँसा के इस्तीफे की मांग करते हुए सड़कों पर आ गए हैं। ज्यादातर प्रदर्शनकारी अपनी अपनी साइकिल

लेकर प्रदर्शन करने के लिए पहुंचे हैं।स्लोवेनिया में कोरोना के कारण 100 लोगों की मौत हुई है। वहीं 1450 से ज्यादा लोग संक्रमित पाए गए हैं। कोरोना जैसे संक्रमण से निपटने के लिए सरकार द्वारा जो इंतजाम किए जा रहे हैं। उस में भारी घोटाला किया जा रहा है। जिससे यहां के लोग काफी नाराज हैं और वह प्रधानमंत्री से इस्तीफे की मांग कर रहे हैं।

कोरोना से दुनिया में 2.76 लाख मौत, 40 लाख संक्रमित

– यूएस में मृतकों की संख्या 78 हजार के पार

लंदन (ईएमएस)। दुनिया वैश्विक महामारी कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या 2.76 लाख से ज्यादा हो गई है और संक्रमितों की संख्या 40 लाख 12 हजार से ज्यादा हो गई है। जबकि 13 लाख 85 हजार से ज्यादा लोग ठीक हो चुके हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा प्रभावित देश अमेरिका में मृतकों की संख्या 78 हजार को पार कर गई है और 13 लाख 21 हजार से ज्यादा लोग संक्रमित हैं। इंग्लैंड में कोरोना महामारी के कारण छह सप्ताह के बच्चे की मौत हो गई है। अधिका?रिक आंकड़ों के मुताबिक यूनाइटेड किंगडम में कोरोना के कारण मरने वालों की संख्या 31,241 हो गई है। वहीं दक्षिण कोरिया में पिछले 24 घंटे में कोरोना वायरस के 18 नए मामले सामने आए और इनमें से 12 मामले राजधानी सियोल में सामने आए। ये मामले तब सामने आए हैं जब स्वास्थ्य कर्मी क्लबों में जाने वाले कुछ लोगों से संक्रमण फैलने के बाद उनके संपर्क में आए लोगों का पता लगाने में जुटे हैं। चीन में कोरोना वायरस के 15 ऐसे नए मामले सामने आए हैं जिनमें संक्रमण के लक्षण नही हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि ऐसे कुल मामलों की संख्या 836 हो गई है जबकि विदेशों से संक्रमण लेकर आने वाले एक मामले की भी पुष्टि हुई है। चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के मुताबिक शुक्रवार तक विदेशों से संक्रमित होने वाले 63 लोग समेत 836 बिना लक्षण वाले मामले अब भी चिकित्सीय निगरानी में हैं।

बच्चों की मौत के मामले में मध्य प्रदेश नंबर वन पर

भोपाल (ईएमएस)। एसआरएस बुलेटिन के अनुसार, जो 8 मई 2020 को जारी हुई है। इसमें 2018 की गणना के अनुसार मध्य प्रदेश बच्चों की मौत के मामले में सबसे ऊपर है। मध्यप्रदेश में शिशु मृत्यु दर 48 है। वही उत्तर प्रदेश में 43, असम में 41, छत्तीसगढ़ में 41, उड़ीसा में 40, राजस्थान में 37, बिहार में 32, उत्तराखंड में 31, हरियाणा में 30, झारखंड में 30 और आंध्र प्रदेश में 29 बच्चों की मृत्यु होती है। पहले 10 राज्यों में मध्य प्रदेश सबसे ऊपर है।

1000 जीवित जन्म लेने वाले बच्चों में से 48 बच्चों की मध्यप्रदेश में 1 साल के पहले ही मौत हो जाती है। 2018 के पहले शिशु मृत्यु दर 47 थी जो अब बढ़कर 48 हो गई है।

भारत में शिशु मृत्यु दर का औसत 1000 बच्चों में 32 बच्चों का है। मध्यप्रदेश में ग्रामीण क्षेत्रों में शिशु मृत्यु दर सबसे ज्यादा है। ग्रामीण क्षेत्रों में 1000 बच्चों में से 52 बच्चों की मौत 1 वर्ष से कम अवधि में हो जाती है। वहीं शहरी क्षेत्रों में इसका औसत 36 है।

शिवसेना नेता राउत बोले– सरकार को प्रवासी मजदूरों को ले जाने निजी गाड़ियों को इजाजत देनी चाहिए

मुंबई (ईएमएस)। कोरोनकाल में जारी लॉरडाउन के चलते घर लौट रहे मजदूरों की सबसे बुरी स्थिति है। हालात के मद्देनजर शिवसेना के वरिष्ठ नेता संजय राउत ने रविवार को कहा कि महाराष्ट्र सरकार को लॉकडाउन के दौरान प्रवासी मजदूरों को उनके मूल स्थानों पर ले जाने के लिए निजी गाड़ियों को अनुमति देनी चाहिए। प्रवासी मजदूरों के अपने गृह नगर पैदल जाने पर चिंता व्यक्त करते हुए राउत ने कहा कि वे बीमार पड़ रहे हैं और उनमें से कुछ की मौत भी हो गई है। राउत ने ट्वीट किया, मजदूर वर्ग पैदल ही घर वापस जा रहा है। यह अच्छी तस्वीर पेश नहीं करता है। उनके बच्चे उनके साथ हैं। रेलवे उनके लिए ट्रेनें चलाने को तैयार नहीं है। राज्य सरकार को निजी गाड़ियों को चलाने की इजाजत देनी चाहिए। राज्यसभा सदस्य ने कहा, लोग पैदल जाने के कारण दौरान बीमार पड़ रहे हैं। कुछ की तो मौत भी हो गई है। फिर भी उनका पैदल जाना नहीं रुका है। उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश लौटने के दौरान रेल की पटरियों पर सो रहे 16 प्रवासी मजदूरों की शुक्रवार को महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में मालगाड़ी से कटकर मौत हो गई थी।

संपादकीय

(वर्ल्ड–टैक्नोलॉजी डे–11मई)

नयी सदी में तकनीक के नए तेवर

आधुनिक दौर के इस तथ्य की स्वीकार्यता आज पूरे विश्व में हो चली है कि अब टैक्नोलॉजी हर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की जरुरत बन गयी है। दुनियां में टैक्नोलॉजी का बढ़ता साम्राज्य कई खतरनाक ख्यालों को भी बड़ी मासूमियत से दबा ले जाता है। मन हार–थक कर मान ही जाता है कि तकनीक अब मनुष्य को ग–वर्न करने की हैसियत हासिल कर चुकी है। यह समाज को उसी गुड–गर्वनेंस की तरह सुविधा और स्वतंत्रता परोसती है। जिसमें व्यक्ति खुशी–खुशी अपने किसी भी स्वतंत्र ख्याल का खात्मा खुद ही कर लेता है। वह एक सभ्य, अनुशासित और आधुनिक नागरिक का जीवन तकनीकी तरीकों से जीने को लाजिमी मान लेता है। इतना ही नहीं बल्कि अपनी भावी नस्लों को भी उनके शिक्षण–प्रशिक्षण में पारंगत करना ही अपना प्राथमिक दायित्व समझ लेता है।

इसकी कुछ ठोस वजह है, टैक्नोलॉजी ने न सिर्फ लोगों की जिंदगी को सरल बनाया है। बल्कि जीवन जरुरत के रुप में उसे एक आधुनिक मूल्य की तरह स्थापित भी किया है। तकनीकी ने व्यक्ति को इस स्तर तक फैसीलीटेट किया है कि आपात् हालात इमरजेंसी में, कैसे भी जोखिम में और कितने भी व्यापक दायरे में तकनीक ने उसके साथ खड़े होकर कहा है कि क्या चाहिए बच्चा बोलो। मैं आपके साथ हूं। जहां दूर–दूर तक किसी मदद की कोई गुंजाईश ना दिखती हो वहां तकनीक आपको मदद करती है। ऐसे में कोई उसका मुरीद ना हो, ऐसा कैसे हो सकता है। तकनीकी सुविधाओं को भोगता व्यक्ति उसका अहसान ऐसे चुकाता है कि जगह–जगह गुणगान करता नहीं थकता है। 'हालात ऐसे थे, ये ना हुआ होता तो आज यह ना होता'। व्यक्ति के जीवन रक्षण तक में टैक्नोलॉजी ने अपनी अहम् भूमिका के जरिए बढ़त बना ली है। कोरोना संकट के दौरान भी दुनियां ने इनफॉरमेशन टैक्नोलॉजी ईार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का जलवा देखा है। जहां इंसान काम नहीं कर पा रहे थे वहां टैक्नोलॉजी ने ही मोर्चा संभाला। दुनियां भर से रपटें आती है कि तकनीक के कारण ही उसने स्वयं को बचा लिया और दूसरों को भी संकट से निकाला। टैक्नोलॉजी गजटस गजब के करिश्माई अंदाज में हमारी मदद करते हुए दिनों–दिन मनुष्य के जीवन का जरुरी हिस्सा बन रहे है। समाज का जो तबका उनके संचालन में दक्षता हासिल नहीं कर पा रहा है, वह टैक्नोलॉजी के सहयोग और उसके लाभों से वंचित रह जायेगा।

तकनीक के महत्व को साबित करने वाले ढेरों यंत्र, उपकरण और गजेटस है जो उसकी सार्थकता में इजाफ़ा कर रहे है। एप्पल की स्मार्ट–वॉच किसी भी खतरे को डिटेक्ट करने की क्षमता से लैस है। जो किसी इमरजेंसी में सहयता के लिए अलर्ट भेजने में दक्ष है। एप्पल–वॉच इमरजेंसी की स्थिति में सेंसर के सहारे लिस्टेड कॉन्टैक्ट्स को नोटिफिकेशन भेजती है। जो लाइफ को बचाने में ढ़ेरो कीर्तिमान बनाती जा रही है। इतना ही नहीं आपके करीबीयों को भी आपके संकट के बारे में जानकारी देती हैं। यह सब किसी करिश्में से कम थोड़े ही है। टेली–मेडीसीन में तो टैक्नोलॉजी गज़ब के किरदार में उभरी है। एक एमबीबीएस करते जूनियर डाक्टर ने लाइव वाट्सएप की मदद से चलती ट्रन अहमदाबाद–पुरी एक्सप्रेस में ही महिला की सफल डिलिवरी करा दी। अपने सीनियर डाक्टर्स से पूछ–पूछ कर महिला की मदद की। यह किसी अवतारी मदद से कम नहीं है।

इसी तरह बाजार में अलार्म–रिंग के रुप में अंगूठी की तरह पहना जाने वाला एक गजब का गैजेट आया है। जिसका कनेक्शन आपके स्मार्ट फोन से होता है। बाहर जाते समय इसे हाथ में रिंग की तरह पहनिए, जब आप किसी भी तरह के खतरे का अंदेशा देखे तो इसके बटन को दबाकर अपने नजदीकियों से फोन पर हेल्प मांग सकते है, उन्हें बता सकते है, मैसेज भेज सकते है। पिछले दिनों जब चेन्नई में बाढ़ आयी तो वहां टैक्नोलॉजी ने पीड़ित लोगों की मदद कर एक नया अध्याय सफलतम् किर्तीमानों के साथ गढ़ा। बाढ़ में फंसे पीड़ितों ने ट्विटर पर मदद की गुहार लगायी। हैशटैग चेन्नई रेन को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाया। जिसका परिणाम लोगों तक मदद समय से पंहुच गई, उनकी जान बच पायी। इसी तरह आये दिन विदेशों में फंसे मजदूर और घरेलू कामगार महिलाएं विडियों–व्हाट्सअप के जरिए सरकार से गुहार लगाती दिखती है कि हम यहां से अपने देश लौटना चाहते है। टैक्नोलॉजी का आदी बनता जीवन, बावजूद इसके हमारे देश में अनगिनत इलाकों में नेटवर्क तक सही से उपलब्ध नहीं है। जिसके लिए एक्सटरनल एंटीना मोबाइल नेटवर्क में मददगार बनता है। इसकी मदद से प्राइवेट नेटवर्क क्रिएट हो जाता है। जो लो–फ्रीक्वेंसी–वेव्स को करीब 80 किमी तक बढ़ाने में मददगार है।

इसी तरह पर्यावरण प्रदूषण की चुनौती आज पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर मुददा बनी हुई है। जिसके समाधान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के रुप में टैक्नोलॉजी ने एक नए अवतार की भूमिका निभायी है। जिसमें आंकड़ों की मदद से प्रदूषण का डेटा लेकर विश्लेषण किया जाता है। उपग्रहीय तकनीक से पृथ्वी पर पड़े कचरे के आंकड़े सेंसर से जुटाकर ए.आई. के जरिए, उनका भू–स्थानिक स्थितियों के अनुसार आकलन किया जाता है। जो एप के माध्यम से लोगों को सूचित करता है कि कहां प्रदूषण का क्या स्तर है। इसी तरह पानी की गुणवत्ता को भी पहले से जाना जा सकता है। इतना ही नहीं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए रोडबाउंस तकनीक स्मार्टफोन से यह जान लेती है कि सड़क पर दौड़ने वाली गाड़ियां कहां कितनी तेज चल रहीं है और कितनी उछल रहीं है। इससे बुनियादी ढांचे को सुधारने और सड़कों को सुरक्षित बनाने तथा सफर को आसान बनाने में मदद मिलती है। इतना ही नहीं विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि आपूर्ति विभाग, परिवहन, बीमा, टायर और ऑटो उद्योग से जुड़े विशेषज्ञों को सड़कों से जुडी सही जानकारी मिले तो उन्हें काफी फायदा हो सकता है। वास्तव में दैनिक जरूरतों के इस्तेमाल के लिए तो बहुत सारी कंपनियां उत्पाद बना रही हैं, लेकिन टेक–डेवलपर्स और उपभोक्ताओं के बीच की खाई को पाटने के लिए बहुत कम कंपनियां आगे आई हैं। सोलर उर्जा का क्षेत्र भी हर तरह से क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए उभरता क्षेत्र है। टैक्नोलॉजी को जनोपयोगी बनाने की दिशा में विशेष रुप से काम करने की जरुरत है।

(विचार–मंथन)

पाकिस्तान को दो टूक जवाब

30 अप्रैल को पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने पाकिस्तानी सरकार की याचिका पर फैसला देते हुए गिलगित–बाल्टिस्तान ऑर्डर, 2018 में बदलाव कर इस इलाके में एक कार्यकारी सरकार बनाने और नए सिरे से चुनाव करवाने के आदेश दिए थे। तब भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा था कि भारत सरकार ने इस मुद्दे पर स्थिति 1994 में संसद में पास हुए एक प्रस्ताव के जरिए स्पष्ट कर दी थी और भारत की आज भी यही राय है। इस बयान पर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान से लेकर संयुक्त राष्ट्र में बैठे उनके प्रतिनिधि तक ने विधवा विलाप किया था। लेकिन अब भारत ने वह कर दिखाया है, जो बताता है कि हमारे एजेंडे में क्या है और क्या नहीं। भारत ने पाकिस्तान को साफ–साफ समझा दिया है कि गिलगित–बाल्टिस्तान उसका अभिन्न अंग है। भारतीय मौसम विभाग ने जम्मू–कश्मीर सब–डिविजन को अब जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, गिलगित–बाल्टिस्तान और मुजफ़्फ़राबाद कहना शुरू कर दिया है। गिलगित–बाल्टिस्तान और मुजफ्फराबाद, दोनों पर पाकिस्तान ने अवैध रूप से कब्जा कर रखा है। मंग. लवार को मौसम विभाग ने नॉर्थवेस्ट इंडिया के लिए जो अनुमान जारी किए, उसमें गिलगित–बाल्टिस्तान और मुजफ़्फराबाद को भी शामिल किया गया है। मौसम विभाग के डायरेक्टर–जनरल मृत्युंजय महापात्रा ने कहा कि विभाग पूरे जम्मू–कश्मीर और लद्दाख के लिए वेदर बुलेटिन जारी करता रहा है। हम बुलेटिन में गिलगित–बाल्टिस्तान, मुजफराबाद का जिक्र इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वह भारत का हिस्सा है। इसी महीने की शुरुआत में भारत ने साफ कहा था कि पाकिस्तान का इन इलाकों पर कोई हक नहीं है।

मजदूरों का पलायन और हादसों के बीच मौतों का काला सच!!!

उन्हें गरीबी से नहीं बल्कि सिस्टम से शिकायत थी जिसकी आखिर वो भेंट चढ़ ही गए! दरअसल देश भर में मजदूरों के पलायन के पीछे के सच को भी जानना जरूरी है और यह भी कि सबसे ज्यादा मजदूर उत्तरी और उत्तर–मध्य भारत जिसमें बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ के ही दूसरे प्रान्तों में कैसे पहुँच जाते हैं वह भी अनजान जगहों और कारखानों में?

औरंगाबाद रेल दुर्घटना ने कोरोना महामारी बीच हर किसी को बुरी तरह झकझोर दिया। बेवक्त 16 मजदूर काल के गाल में समा गए। कोई कहता वो मजबूर हैं तभी तो मजदूर हैं तो कोई वक्त का मारा बताता। कोई गरीबी को दोष मढ़ता तो कुछ पलायन पर ही सवाल उठाते। लेकिन यह कोई नहीं बताता कि वह स्वाभिमानी थे, मेहनतकश थे, उन्हें अपने पसीने से कमाए पैसों से पेट भरने की आदत थी। किसी के आगे हाथ नहीं पसारते थे। उन्हें गरीबी से नहीं बल्कि सिस्टम से शिकायत थी जिसकी आखिर वो भेंट चढ़ ही गए! दरअसल देश भर में मजदूरों के पलायन के पीछे के सच को भी जानना जरूरी है और यह भी कि सबसे ज्यादातर मजदूर उत्तरी और उत्तर–मध्य भारत जिसमें बिहार,उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ के ही दूसरे प्रान्तों में कैसे पहुँच जाते हैं वह भी अनजान जगहों और कारखानों में?

पहले बात औरंगाबाद रेल दुर्घटना की। मारे गए सभी लोगों से मेरा करीबी नाता है, वो मेरे अपने इलाके के हैं। कई के गांव में जा चुका हूँ। सबके सब निरा आदिवासी। थोड़ा बहुत पढ़े थे, सीधे, सादे बेहद भोले और विनम्र इतने कि पूछिए मत। कुछ के पास थोड़ी सी जमीन थी जिसमें परिवार बढ़ने के साथ गुजारा नहीं हो पाया तो स्वाभिमान से परिवार के पेट की भूख मिटाने की खातिर बाहर निकल गए। मरने वालों में 11 एक ही जनपद जयसिंहनगर के आस–पड़ोस के गाँवों के, उसमें भी 7 एक ही परिवार के हैं दो तो सगे भाई भी। 4 उमरिया जिले के नेउसा गाँव के थे जबकि एक चिल्हारी गाँव का। यूँ तो पूरा क्षेत्र बल्कि देश–प्रदेश गमगीन था लेकिन जिन गाँवों में अंत्येष्टी होनी थी उसका मंजर शब्दों में बयाँ करना बहुत मुश्किल है। परिवार वाले तो शवों के पहुँचने के बाद भी चेहरे नहीं देख पाए। जहाँ शहडोल प्रशासन ने 11 मृतकों को गाँव से 1 किमी दूर जेसीबी से खुदे गढ्ढों में एक साथ दफनाने का इंतजाम किया जबकि परिजन चाहते थे कि प्रशासन को दफनाना ही है तो यह उनकी पैतृक भूमि पर ऐसा किया जाए। वहीं कुछ किमी दूर उमरिया के नेउसा में 4 तथा चिल्हारी गाँव में 1 चिता का अंतिम संस्कार किया गया। अब दो अलग तरीके क्यों अपनाए गए यह तो प्रशासन जाने लेकिन सरकार के शवों को घर तक पहुँचवाने की संवेदनशीलता तारीफ के योग्य है। हाँ परिवार को इच्छानुसार अंतिम क्रिया न करने की टीस ने हमेशा के लिए एक अलग ही दर्द शहडोल जिले के मृतक परिवारों को जरूर दे दिया। इस पर भी सवाल उठ रहे हैं, उठने भी चाहिए। एक ही हादसा और अंतिम संस्कार के दो अलग तौर तरीके?

सवाल फिर वही कि मजदूरों का काम के लिए घरों से पलायन आखिर कैसे होता है? अब वक्त आ गया है कि इस पर सोचना ही होगा। उसमें भी केवल उत्तर और उत्तरी भारत के 5 प्रान्तों के मजदूर ही ज्यादातर पलायन करते हैं। पलायन दो तरीके से होता है। पहला मजदूर एक प्रान्त से दूसरे प्रान्तों में जाते हैं जिसे एक्सचेंज ऑफ लेबर भी कह सकते हैं। जबकि दूसरा यहीं के मजदूर बड़ी संख्या में दूसरे राज्यों और मेट्रोपोलिटन शहरों में भी जाकर काम करते हैं। इनमें दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, चेन्नई, सहित पंजाब, जम्मू–कश्मीर, महाराष्ट्र, गोवा यानी पूरे देश में कहीं भी काम को चले जाते हैं। अब फिर सवाल कि कम पढ़ा लिखा और सीधा आदिवासी तबका कैसे बड़े शहरों की चकाचौंध में काम तलाश लेता है? बस यहीं से शुरू होता है पलायन का असली सच। सच को जानने से पहले यह भी समझना जरूरी है कि आखिर क्यों सरकारों, जिला प्रशासन जहाँ काम के लिए पहुँचते हैं वहाँ भी इनकी पूरी जानकारी किसी को क्यों नहीं होती है? हैरानी की बात है कि जो बातें पलायन करने वालों के गाँवों से लेकर उनके गृह जिलों तक में खुले आम सुनने को मिलती है उससे स्थानीय प्रशासन और श्रम विभाग कैसे बेखबर रहता है? जहाँ तक मैंने अपने क्षेत्र में देखा है अकेले शहडोल संभाग से ही हजारों की तादाद में मजदूरों को बाहर पलायन के लिए कुछ लोग उकसाते हैं। इसके लिए एक संगठित गिरोह काम करता है जिसके बाहर जबरदस्त नेटवर्क होते हैं। इन्हें स्थानीय भाषा में दलाल या ठेकेदार कहते हैं। ये बाहर के उद्योगों, कारखानों, निर्माण कंपनियों और दीगर जरूरत मंदों को उनकी डिमाण्ड के मुताबिक मजदूरों की सप्लाई करते हैं जिसके बदले ऐसे दलालों को प्रति मजदूर 5 से 7 हजार रुपए तक मिलते हैं। इसी कारण कुछ विशेष क्षेत्रों से पलायन कहें मानव तस्करी का यह कारोबार तेजी से फैल रहा है जिससे तमाम सरकारें बेखबर हैं। औरंगाबाद रेल हादसे में मारे गए मजदूर भी दलालों के जरिए ही गए थे। इन दलालों पर क्या कार्रवाई होगी यह तो सरकार जाने लेकिन जम्मू में शहडोल जिले के सैकड़ों मजदूर अभी भी घर वापसी के लिए पहले लॉकडाउन के बाद से ही कोशिशों में लगे हुए हैं। ऐसे 62 मजदूरों का एक जत्था अखनूर के मांड़ा गाँव में फंसे हैं और घर वापसी हेतु जनप्रतिनिधियों तथा गृह जिला के प्रशासन से गुहार लगा चुके हैं। जिन्हें सिवाए आश्वासन के अब तक कुछ नहीं मिला। ऐसे ही एक मजदूर दयाराम ने फोन पर बताया कि खाने का स्थानीय इंतजाम अच्छा है और उनके खातों में एक हजार रुपए भी आ गए हैं लेकिन कब वापसी होगी कुछ पता नहीं।

सच तो यह कि मजदूरों को तरह–तरह के सब्ज बाग दिखाए जाते हैं। बहला–फुसलाकर किसी कारखाने, सेठ या वहाँ के दलालों के सुपुर्द कर दिया जाता है जो इन्हें एक तरह से कब्जे यानी अपहरण वाली स्थिति में रखते हैं। महीनों काम कराते हैं। केवल खाने के लिए पैसे देते हैं। साल में एक बार लौटने को मिलता है तब रोकी गई पगार जरूर देते हैं उसमें भी कुछ हिस्सा दबा लेते हैं ताकि मजबूर मजदूर दोबारा वहीं लौटे। कई पाठकों ने इटारसी, कटनी, सतना, जबलपुर, बिलासपुर, दिल्ली और तमाम स्टेशनों पर छुट्टियों के दिनों में ट्रेन सफर के दौरान ऐसे प्रवासी मजदूरों की भीड़ देखी होगी। कटनी में तो बहुत ही ज्यादा होती है जो छत्तीसगढ़ की ओर कूच करते हैं और ट्रेनों में जानवरों से भी बदतर स्थिति में भर यात्रा करते हैं।

इन परिस्थितियों में कुछ सवाल उठते हैं एक तो यह कि राज्यों में आपसी एक्सचेंज ऑफ लेबर रोका जाए। इन्हें अपने राज्यों में ही काम के लिए प्रेरित किया जाए। क्षेत्रीय मजदूरों को भी वही मजदूरी मिले जो दूसरे राज्यों के मजदूर को दी जाती है। दूसरा यह कि तुरंत एक नीति बने जिसमें एक राज्य से दूसरे राज्य जाने वाले मजदूरों को बिना पंजीयन काम न मिले और एक नेशनल पोर्टल हो जिसमें सारे मजदूरों का डेटाबेस इकट्ठा किया जाए एक यूनिक आईडी जेनरेट हो ताकि देश के कोने–कोने में काम कर रहे एक–एक मजदूरों का सारा रिकॉर्ड अपडेट होता रहे जिससे राज्य, जिला, ग्रामवार सूचियाँ एक क्लिक पर मिल सकें। कोरोना संक्रमण के दौरान विभिन्न राज्यों में वापसी करने वाले मजदूरों के लिए हालांकि कई राज्यों ने हेल्पलाइन नंबर और पोर्टल खोले हैं पर यह सच भी समझना होगा कि वो मजदूर हैं और ज्यादातर एंड्रॉयड मोबाइल रखकर भी पंजीयन व संपर्क करने में अक्षम होते हैं क्योंकि मोबाइल का उपयोग केवल मनोरंजन और घर–परिवार से बात के लिए करते हैं।

औरंगाबाद हादसे के अलावा भी मजदूरों की कहीं सड़क हादसे में तो कहीं बीमारी से मौतों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। गैर सरकारी आंकड़े बताते हैं कि आधा सैकड़ा मजदूर कहीं न कहीं किसी न किसी कारण से रोज दम तोड़ रहे हैं। निश्चित रूप से यह आंकड़ा दो हजार पार कर चुका होगा। ऐसे में यदि सारे मजदूरों का एक डेटाबेस होता तो उन्हें, उनके नियोक्ताओं और वहाँ की राज्य सरकारों को संदेश, सूची व कार्यस्थल की जानकारी देकर रोकने या निकलने की बेहतर व्यवस्था की जा सकती थी। अभी भी वक्त है जब इस पर अमल हो ताकि जहाँ मजदूरों के दलाल दूसरे शब्दों में मानव तस्करों पर लगाम लग सके

(विचार–मनन)

वर्तमान में जिएं

मुनि ने सेठ की पुत्रवधू से पूछा, 'श्वसुरजी कहां हैं? उसने कहा, 'जूते की दुकान पर गए हैं।' श्वसुर उस समय आराधना–कक्ष में आराधना कर रहा था। उसने सुना, वह तत्काल आया और बोला, 'महाराज! मेरी पुत्रवधू ने असत्य कहा है। मैं आराधना कर रहा था। इसने जानते हुए भी असत्य कहा है।' मुनि ने सेठ से कुछेक प्रश्न पूछे। पूछते–पूछते एक प्रश्न के उत्तर में सेठ ने कहा, 'धर्म की आराधना तो चल रही थी, किन्तु एक बात मन में चक्कर लगा रही थी कि आराधना पूरी होते ही मैं दुकान पर जाकर जूते खरीदूंगा। जूते फट गए हैं, अच्छा नहीं लगता। कब आराधना पूरी हो और कब मैं जूते वाले के यहां जाऊं। इसी विचार से आराधना पूरी कर अब बाहर आया हूं।' मुनि बोले, 'सेठजी! तुम्हारी पुत्रवधू ने सत्य ही तो कहा था। तुम्हारा शरीर आराधना–कक्ष में था, पर चित्त जूते की दुकान के चक्कर लगा रहा था। बिना चित्त के आराधना कैसी?' प्रत्येक आदमी की आज यही दशा है। उसका चित्त किसी और दिशा में जा रहा है और शरीर किसी भिन्न दिशा में है। हमारा शरीर स्नायविक प्रिया के आधार पर काम करता है। कोई व्यक्ति जब पहले दिन सीढ़ियों पर चढ़ता है, तब सावधानी से पैर रखता है। दस–बीस बार उन सीढ़ियों पर चढ़ चुकने के बाद पैर अभ्यस्त हो जाते हैं। इसी प्रकार हमारे शारीरिक स्नायुओं को अभ्यास हो जाता है, फिर काम के साथ चित्त को जोड़ना नहीं पड़ता। काम यंत्रवत् पूरा हो जाता है। हमें पता ही नहीं चलता। एक सफल सूत्र है–वर्तमान में जीना।

दैनिक पंचांग

11 मई 2020 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

(कुंडली: 2 शुक्र बुध; 3 राहु; 12; 11 मंगल; सूर्य; 1; 4; 10 गुरु शनि; 7; 9 चंद्र केतु; 5; 6; 8)

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	मेष में	वृष	5.37 बजे से
चंद्र	धनु में	मिथुन	7.35 बजे से
मंगल	कुंभ में	कर्क	9.48 बजे से
बुध	वृष में	सिंह	12.04 बजे से
गुरु	मकर में	कन्या	14.16 बजे से
शुक्र	वृष में	तुला	16.27 बजे से
शनि	मकर में	वृश्चिक	18.41 ब.से
राहु	मिथुन में	धनु	20.57 बजे से
केतु	धनु में	मकर	23.03 बजे से
राहुकाल 7.30 से 9.00 बजे तक		कुंभ	00.49 बजे से
		मीन	2.22 बजे से
		मेष	3.53 बजे से

सोमवार 2020 वर्ष का 132 वां दिन
दिशाशूल पूर्व ऋतु ग्रीष्म।
विक्रम संवत् 2077 शक संवत् 1942
मास ज्येष्ठ (दक्षिण भारत में वैशाख)
पक्ष कृष्ण
तिथि चतुर्थी 6.36 बजे को समाप्त।
नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा 04.10 बजे रात्र को समाप्त।
योग साध्य 02.41 बजे रात्र को समाप्त।
करण बालव 6.36 बजे तदनन्तर कौलव 18.09 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 17.9 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 17° 57'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1870515
जूलियन दिन 2458980.5
कलियुग संवत् 5121
कल्पारंभ संवत् 1972949121
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885121
वीरनिर्वाण संवत् 2546
हिजरी सन् 1441
महीना रमजान तारीख 17

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक	चर	05.43 से	07.14 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक	रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक	काल	08.45 से	10.17 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक	लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक	उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक	शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक	अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक	चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ– शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, मध्यम चर, अशुभ उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

प्रसंगतः बादशाह की सीख

यह घटना उस समय की है, जब दिल्ली के तख्त पर नसरुद्दीन नामक बादशाह बैठा हुआ था। वह बहुत ही भला और सहिष्णु शासक था। वह शाही खजाने का उपयोग केवल प्रजा की भलाई के लिए करता था। वह अपने परिवार का खर्च कुरान शरीफ का अनुवाद करके चलाता था। एक दिन उसके एक नौकर ने कहा, 'बादशाह सलामत! मेरी बेटी की शादी है। यदि आप इसमें थोड़ी सहायता कर सकें तो बड़ी मेहरबानी होगी।' नौकर की बात सुनकर नसरुद्दीन ने कहा, 'भाई, इस समय तो मेरे पास केवल मेरी कमाई के दो रुपये हैं। तुम इन्हें ले जाओ। खुदा तुम्हारा भला करेगा।' केवल दो रुपये देखकर नौकर हैरानी से बादशाह की ओर देखने लगा। बादशाह ने कहा, 'भइया, ये दो रुपये मेरी नेक कमाई के हैं। कुछ कम जरूर हैं, मगर तुम यह हमेशा याद रखो कि नेकी की कमाई में हमेशा बढ़ोतरी ही होती है।' अब इस पर नौकर क्या कहता। उसे लगा बादशाह और पैसे नहीं देना चाहते। वह मायूस होकर अपने गांव चल पड़ा। रास्ते में उसने सोचा कि इन रुपयों से उसकी बेटी की शादी में कोई खास मदद नहीं हो पाएगी, इसलिए उसने उससे अनार की कुछ टोकरियां खरीद लीं। कई दिनों बाद गांव के करीब पहुंचने पर नौकर को पता चला कि नसरुद्दीन की बीवी सख्त बीमार है और हकीम का कहना है कि वह अनार का रस पीने से ही ठीक हो सकती हैं। बादशाह ने घोषणा की थी कि जो कोई भी अनार लेकर आएगा उसे एक अनार के एक हजार रुपए दिए जाएंगे। उस समय राजधानी में अनार नहीं मिल रहे थे। घोषणा सुनकर नौकर तेजी से लौटा और अनार लेकर राजदरबार में पहुंच गया। बादशाह ने खुश होकर सभी अनार खरीद लिए और नौकर को एक लाख रुपये देकर विदा किया। नौकर रुपये लेकर अपने घर लौट आया। उसने धूमधाम से अपनी बेटी की शादी की। बादशाह की बात सच निकली कि नेकी की दौलत में बढ़ोतरी होती है।

लॉफिंग ज़ोन

एक गप्पी, जब मेरे दादाजी मरे तो वह लाखों रूपए छोड़ गए।
दूसरा गप्पी, इसमें कौन सी बड़ी बात है जब मेरे दादाजी मरे तो वह सारी दुनिया छोड़ गए।

☺ ☺ ☺

एक घमंडी दोस्त (दूसरे दोस्त से), "तुम्हें पता है, मैं बड़ों–बड़ों को पानी पिला चुका हूं।"
दूसरा दोस्त अच्छा, "तुम जरूर किसी बड़े होटल में काम करते होंगे।"

☺ ☺ ☺

शिक्षक, "बच्चों ध्यान लगाकर पढ़ो।"
एक छात्र, "गुरूजी में तो चश्मा लगाकर पढ़ रहा हूं, अब ध्यान लगाकर कैसे पढ़ूं।"

☺ ☺ ☺

डॉक्टर (पांच वर्षीय बच्चे से), "बेटे यह दिन में चार चम्मच रोज लेना।"
बच्चा, "लेकिन डॉक्टर अंकल, मेरे घर में तो सिर्फ दो चम्मच हैं।"

☺ ☺ ☺

एक किशोर शराब पीकर नशे की हालत में सड़क पर खड़ा था।
हवलदार ने पूछा, "यहां क्यों खड़ा है?"
किशोर, "इस समय सारा शहर मेरी आंखों के सामने घूम रहा है, अपना घर आते ही घुस जाऊंगा।"

आज का इतिहास 11 मई

1812 ब्रिटेन के प्रधानमंत्री स्पेंसर पर्सीवेल की हत्या हुई.
1824 ब्रिटेन ने रंगून पर कब्जा किया.
1878 जर्मनी के शासक विलियम प्रथम पर जानलेवा हमला हुआ.
1904 स्पेनी कलाकार सल्वाडोर डाली का जन्म हुआ था.
1943 द्वितीय युद्ध में अमरीकी फौजे को एल्यूरिन द्वीप पर पहुंची.
1949 स्याम ने अपना नाम थाईलैंड रखा.
1951 सोमनाथ मंदिर जनता के लिए खोल दिया गया.
1971 इजरायल में एंगोरवाट के मंदिर ध्वस्त हुए.
1973 पश्चिम जर्मनी की संसद ने पूर्व जर्मनी से संबंध कायम करने को मंजूरी दी.
1991 सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचेव ने अपने देश में अराजकता व्याप्त होने की आशंका व्यक्त की.
1995 आतंकवादियों ने प्रसिद्ध सूफी संत शेख नूरुद्दीन वली को मजार चरारे शरीफ को आग लगाकर नष्ट किया.
1996 भाजपा ने सरकार बनाने का दावा किया.
1998 भारत ने राजस्थान के पोकरण में हायड्रोजन बम समेत तीन परमाणु परीक्षण करके आणविक क्षेत्र में महाशक्ति बनने की तरफ कदम बढ़ाया.
1999 उच्चतम न्यायालय ने राजीव गांधी हत्याकांड के 19 अभियुक्तों को रिहा किया व अन्य छः जनों के मृत्युदंड को आजीवन कारावास में बदला.
2000 नई दिल्ली स्थित सफदरजंग अस्पताल में प्रतीकात्मक एक अरबवें बच्ची आस्था का जन्म.
2004 आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में कांग्रेस गठबंधन को तीन चौथाई बहुमत.

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

जिलाधिकारी ने रेलवे स्टेशन पर भ्रमणशील रहकर सूरत से आने वाले प्रवासी श्रमिकों की व्यवस्थाओं का लिया जायजा,

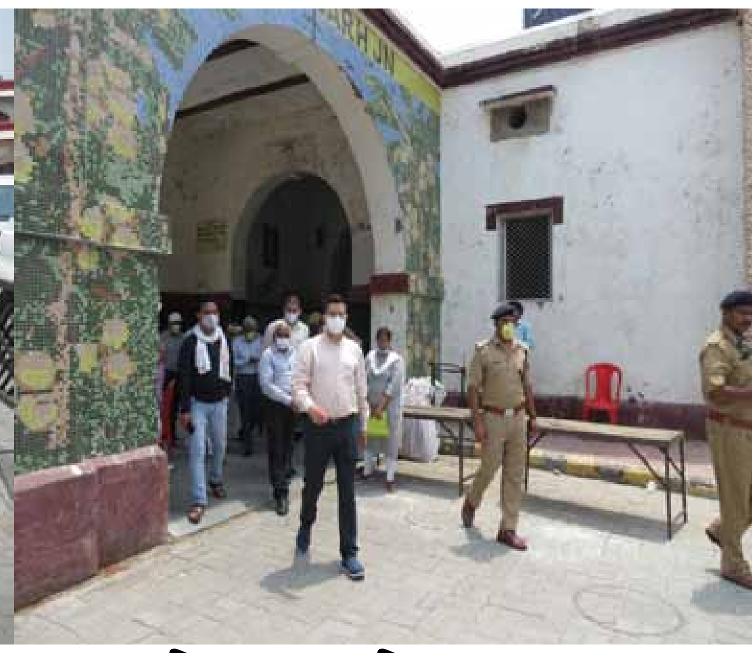

श्रमिक स्पेशल ट्रेन से आने वाले 2538 प्रवासी श्रमिको को उनके गांव एवं जनपदों के लिये किया गया रवाना,

श्रमिक स्पेशल ट्रेन सूरत (गुजरात) से कल सायंकाल प्रतापगढ़ जंक्शन पर रात्रि 8.57 बजे पहुॅची जिसमें 1307 प्रवासी श्रमिक आये थे तथा आज दिनांक 10 मई 2020 को भी श्रमिक स्पेशल ट्रेन सूरत (गुजरात) से प्रतापगढ़ जंक्शन पर पूर्वान्ह 9.10 बजे पहुॅची जिसमें 1231 प्रवासी श्रमिक आये थे।

जिलाधिकारी डा0 रूपेश कुमार ने प्रवासी श्रमिकों के प्रतापगढ़ जंक्शन आगमन पर भ्रमणशील रहकर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण करते रहे तथा रेलवे स्टेशन पर तैनात मजिस्ट्रेटों को आवश्यक दिशा निर्देश देते रहे। भ्रमण के दौरान जिलाधिकारी ने स्वास्थ्य विभाग द्वारा किये जा रहे

स्वास्थ्य परीक्षण एवं उपलब्ध कराये जा रहे लंच पैकेट एवं पेयजल के सम्बन्ध में प्रवासी श्रमिकों से जानकारी प्राप्त की। रेलवे स्टेशन पर प्रवासी श्रमिकों का सोशल डिस्टेसिंग का अनुपालन कराते हुये स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण कराकर लंच पैकेट वितरित किया गया और उन्हें उनके गृह जनपद के लिये बसों के माध्यम से भेजा गया तथा जो प्रवासी श्रमिक जनपद प्रतापगढ़ के ही थे उन्हें डा0 जयमंगल सिंह प्राथमिक शिक्षण संस्थान भुपियामऊ के क्वारेन्टाइन सेन्टर में भेजा गया जहां पर

उनका स्वास्थ्य परीक्षण एवं खाद्यान्न किट देकर उन्हें उनके गांव में 21 दिनों के लिये होम क्वारेन्टाइन के लिये भेज दिया गया।

स्टेशन परिसर पर मुख्य विकास अधिकारी डा0 अमित पाल शर्मा एवं समस्त मजिस्ट्रेटों ने अपने–अपने दायित्वों का भलि–भांति निर्वहन किया। मजदूरों के प्लेटफार्म से निकलने हेतु 02 निकासी मार्ग बनाये गये थे तथा समस्त बसों को व्यवस्थित तरीके से पार्क कराया गया था एवं उसमें सोशल डिस्टेसिंग का अनुपालन कराते हुये प्रत्येक बस में श्रमिकों को सूची के अनुसार व्यवस्थित ढंग से बैठाया गया और उन्हें उनके जनपदों के लिये भेजा गया।

प्रतापगढ़ जंक्शन स्टेशन पर मुख्य विकास अधिकारी डा0 अमित पाल शर्मा, मुख्य राजस्व अधिकारी श्रीराम यादव, मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, ए0आर0एम0 रोडवेज एम0आर0 भारती, स्टेशन अधीक्षक ए0के0 दूबे, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार सहित सम्बन्धित अधिकारी सौपे गये अपने–अपने दायित्वों का भलि भांति निर्वहन करते रहे।

गुजरात से यूपी आ रही ट्रेन में युवक की हुई संदिग्ध मौत

लखनऊ । लॉकडाउन में फंसे मजदूरों को गुजरात के भावनगर से बस्ती आ रही ट्रेन में एक 30 वर्षीय युवक की संदिग्ध मौत हो गई। मृतक का नाम कन्हैया लाल था और वह सीतापुर के तालगांव इलाके का रहने वाला था। बताया गया युवक की मौत के बाद यात्रियों में हड़कंप मच गया। हालांकि युवक की मौत के बाद ट्रेन को लखनऊ रेलवे स्टेशन में रोक लिया गया। फिलहाल जीआरपी ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। वहीं, मृतक के परिवारवालों को सूचना दे दी गई है। हालांकि अब तक मौत की वजह का पता नहीं चल सका है। बताया जा रहा है कि झांसी में युवक पहले नीचे की बर्थ पर कुछ देर के लिए बैठा भी था। इसके बाद गाड़ी भावनगर से सीधे बस्ती के लिए रवाना हुई थी, इसलिए बीच में कहीं और नहीं रोका गया। फिलहाल पुलिस ने पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट सामने आने के बाद ही खुलासा होने की बात की है। यूपी के अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि अब कुल मिलाकर 114 ट्रेनों में लगभग 1 लाख 20 हज़ार से अधिक लोग उत्तर प्रदेश पहुंच जाएंगे। इसके अतिरिक्त 98 ट्रेनों की अनुमति आगामी 2 दिवसों के लिए जारी कर दी गई है, यानि एक दिन में 40 से अधिक ट्रेनों को चलाने की व्यवस्था की गई है।

दिल्ली से बिहार जा रहे मजदूर हुए हादसे के शिकार

लखनऊ । लखनऊ में साइकिल पर सवार होकर दिल्ली से बिहार जा रहे एक मजदूर को एक अज्ञात वाहन ने रौंद दिया। इसके बाद से हालत में ट्रामा सेंटर में एडमिट कराया गया, जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। बताया गया कि मृत। सगीर अंसारी मूल रूप से बिहार के मोतिहारी का रहने वाला था और वह नई दिल्ली में एक कारखाने में सिलाई का काम करता था। सगीर के साथियों ने बताया कि लॉकडाउन बढ़ने के कारण 5 मई को सात साथियों समेत सगीर साइकिल से ही मोतिहारी के लिए निकल लिया। इसके बाद शहीद पथ पर रुक कर सभी मजदूर साथ लाए चूड़ा खाया और फिर पानी की तलाश में सगीर ने शहीद पथ पार करने की कोशिश की तभी एक अज्ञात वाहन की चपेट में आ गया। घटना की सूचना पर 112 इमरजेंसी वाहन मौके पर पहुंचा और सगीर को ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया, जहां उसकी मौत हो गई। हालांकि पुलिस ने सगीर के परिजनों को भी मौत की सूचना दे दी है।

दिल्ली से बिहार–यूपी चले मजदूरों को गाजियाबाद में रोका गया

गाजियाबाद । दिल्ली से अपने घर जा रहे सैकड़ों प्रवासी मजदूरों को गाजियाबाद में ही पुलिस ने रोक दिया। जानकारी के मुताबिक, सभी मजदूर उत्तर प्रदेश और बिहार के रहने वाले हैं और ये लोग पैदल ही घर के लिए निकले थे। मजदूरों ने कहा कि उनके पास भोजन या घर के किराए के लिए पैसे नहीं बचे हैं। ऐसे में खाने के लाले पड़ गए हैं। मजदूरों ने कहा कि हमारे लिए कोई ट्रेन या बस सेवा शुरू नहीं की गई है।

सूत्रों के मुताबिक, पैदल घर जा रहे मजदूरों को सिर्फ दिल्ली–एनसीआर में ही नहीं बल्कि पूरे देश में रोका जा रहा है। इससे पहले उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग 24 के गंगा पुल से पैदल घर जा रहे सैकड़ों प्रवासी मजदूरों को पुलिस ने आगे बढ़ने से रोक दिया था। इसके बाद उन्होंने हंगामा किया। इस बारे में अधिकारियों ने कहा कि मजदूर दिल्ली की तरफ से आ रहे थे और वे जल्द से जल्द घर जाना चाहते थे। धनौरा क्षेत्राधिकारी मोनिका यादव ने कहा कि उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया था कि उनकी यात्रा के लिए बसों की व्यवस्था की जाएगी, लेकिन वे पैदल ही घर जाने पर अड़े रहे।

इंसानों के साथ–साथ बेजुबां जानवरों के लिए भी वरदान साबित हो रहा आर एंड एस राष्ट्र सेवा संस्थान.

अमेठीः कोरोना वायरस की महामारी की वजह से देश और दुनिया में हाहाकार मचा है भारत में कोरोना को फैलने से रोकने के लिए लॉकडाउन लगाया गया है,ऐसे में आम जनमानस को काफी दिक्कतें आ रही हैं.इस संकट के बीच समाज के अलग–अलग तबके मदद के लिए सामने आ रहे हैं.इसी क्रम में आर एंड एस राष्ट्र सेवा संस्थान ने कोरोना महामारी से निपटने के लिए जरूरतमंद और गरीब लोगों की नहीं बल्कि बेजुबान जानवरों के भोजन आदि की व्यवस्था करा रहा है ।गौरतलब है कि देश ने कोरोना वायरस जैसी महामारी का संकट कभी नहीं देखा.इसे रोकने के मकसद से लॉकडाउन हुआ तो सबसे ज्यादा चोट गरीब तबके को पहुंची,जो रोजाना कमाई करके अपना घर चलाते थे.लेकिन लॉक डाउन होने के कारण इनके काम और रोजगार छिन गए और खाने पीने का संकट खड़ा हो गया।जिसको देखते हुए आर एन्ड एस राष्ट्र सेवा संस्थान देश के पंजाब प्रांत के मोहाली जिले के बलौंगी में प्रवासी मजदूरों को कई महीने से लंगर का आयोजन व सूखा राशन बाँट रहा है।यही नहीं लॉक डाउन के दौरान ये संस्थान बेजुबान जानवरों के तूड़ी आदि व्यवस्था करने में बढ़ चढ़ कर सहयोग कर रहा है।आपको बता दे कि यूपी के प्रतापगढ़ जिले के सगरा सुंदरपुर में वर्ष 2013 से आर एंड एस राष्ट्र सेवा संस्थान द्वारा गौशाला भी संचालित की जा रही है जो बिना किसी शासकीय सहायता से चल रही है।आर एन्ड एस राष्ट्र सेवा संस्थान की संस्थापक प्रतिभा पाण्डेय ने बताया कि कोशिश है कि लॉकडाउन की वजह से इस इलाके के कोई भी लोग भूखे पेट न सोएं यह विश्वव्यापी आपदा है जिसकी वजह से करोड़ों लोग प्रभावित हो रहे हैं.आपदा के समय में जरूरतमंदों की सेवा करना सबसे बड़ा मानव धर्म है.आर एन्ड एस राष्ट्र सेवा संस्थान के

सचिव और अखिल भारतीय गौशाला सम्पर्क प्रमुख दया शंकर पाण्डेय ने बताया कि लॉकडाउन में इंसानों का ही नहीं जानवरों का भी हाल बेहाल है।इंसान तो अपनी परेशानी एक–दूसरे से साझा कर मदद हासिल कर लेते हैं,लेकिन बेजुबान जानवर कहां जाएं, कैसे मदद मांगें? लॉकडाउन से खानपान का व्यवसाय ठप होने से जानवरों का भूख मिटाने का सहारा छिन गया है।इन विषम परिस्थितियों में जानवरों के लिए तूड़ी आदि खाने का इंतजाम किया जा रहा हैं।उन्होंने बताया कि वह प्रतापगढ़ जिले के सगरा सुंदरपुर में पिछले 7 सालों से बिना किसी शासकीय अनुदान से गौशाला को चलाते है और इन दिनों लॉकडाउन की वजह से पंजाब में जानवरों के लिए खाने की व्यवस्था कर रहे हैं। इससे उन्हें आत्मशान्ति मिलती है।

संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी के फंदे से लटकता मिला मां–बेटी का शव

हैदरगढ़ बाराबंकी (ईएमएस)। लोनीकटरा थाना क्षेत्र के बेड़ौरा मजरे रबड़हिया गांव में बीती रात पति से मामूली विवाद के बाद आगोश में आई महिला ने पहले अपनी आठ माह की मासूम बालिका को फंदे पर लटका दिया और बाद खुद में फांसी के फंदे पर झूलकर आत्महत्या कर ली। भोर सुबह जब परिवारजन घर के कमरे में गये तो देखा माँ और बेटी का शव फंदे से लटक रहा था। इसके बाद परिजनों में कोहराम मच गया। जिसने भी इस घटना की बात सुनी वह हथप्रद रह गया। घटना की सूचना पर पहुंची मुकामी पुलिस ने दोनों शवों को उतारकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया। जानकारी के मुताबिक उक्त गांव निवासी अनिल कुमार व उनकी पत्नी रूबी उम्र 26 वर्ष के बीच बीती शाम को किसी बात को लेकर दोनों में काफी कह. ासुनी हुई और इसी बात को लेकर नाराज पत्नी रूबी ने घर के अंदर कमरे में जाकर रस्सी के सहारे पहले अपनी आठ माह की मासूम पुत्री आराधना को छत से रस्सी के सहारे फांसी पर लटका दिया और बाद में खुद भी फांसी के फंदे पर झूलकर मौत को गले लगा लिया। आज भोर सुबह जब परिवारीजन उठे और कमरे गये तो सारा नजारा देखकर हैरान रह गये। एक साथ दो शवों को देखकर मौजूद अन्य लोगों की भी आंखों में आसूं आ गये। लोनीकटरा थाना प्रभारी नित्यानंद सिंह का कहना है कि दोनों शवों को पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है मृतका के मायके वालों की इसकी सूचना दे दी गई है। लेकिन अभी तक उनकी तरफ से कोई लिखित तहरीर नहीं मिली है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही आगे की कार्यवाई की जायेगी हलांकि पुलिस मामले की गहनता के साथ जाँच पड़ताल करने में जुटी है।

अलीगढ बसों व ट्रेन को भी किया गया सघनता से सेनीटाइज

गुजरात के दाहोद से अलीगढ़ जंक्शन लेकर पहुंची प्रवासी श्रमिकों की व्यवस्थाओं के संबंध में डीएम चंद्र भूषण सिंह के निर्देश पर नगर आयुक्त सत्य प्रकाश पटेल ने बताया

मातृ दिवस पर महिला ने पेश की ममता की मिशालःछोटी बच्ची को कंधे पर ले इंदौर से पैदल चल पहुँची अमेठी.

अमेठीः जहां एक तरफ पूरा देश कोरोना महामारी से जूझ रहा है वही अमेठी में मातृ दिवस पर अमेठी की रहने वाली महिला ने अपनी ममता की एक मिसाल पेश की है।मिली जानकारी के मुताबिक लॉकडाउन के बीच महिला ने अपनी छोटी बच्ची को कंधे पर बैठाकर ममता का फर्ज निभाते हुए अपने परिजनों के साथ करीब 900 किलोमीटर का सफर तय करके पैदल ही अपने गांव अमेठी पहुंच गई। महिला की इस कार्यशैली की जानकारी जब केंद्रीय मंत्री और अमेठी सांसद स्मृति ईरानी को हुई तो उन्होंने मामले का संज्ञान लेते हुए उन्होंने बीजेपी जिलाध्यक्ष दुर्गेश त्रिपाठी को निर्देश दिया कि वो महिला से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उसे

25,000 रुपए की आर्थिक सहायता देने के साथ अन्य जरूरी खाद्य सामग्री, मास्क,सैनिटाइजर के साथ अन्य आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए तो वहीं अमेठी एसपी ख्याति गर्ग ने भी जगदीशपुर कोतवाली पुलिस को निर्देशित किया जिसके बाद अमेठी पुलिस की जगदीशपुर कोतवाली प्रभारी राजेश सिंह ने परिवार को राशन किट मुहैया कराया। बताते चलें कि जगदीशपुर कोतवाली क्षेत्र के बढोली गांव की रहने वाली महिला रुखसाना बानो अपने परिवार के साथ अमेठी से 900 किलोमीटर दूर इंदौर शहर में रहती थी लॉकडाउन के बीच रुखसाना जब वहां फंस गई तो उन्होंने अपने घर पहुंचने की जिद्द में अपनी बच्ची को कंधे पर बैठाकर ममता का फर्ज निभाते हुए 900 किलोमीटर का सफर पैदल ही तय करते हुए अपने गांव पहुंच गई। फिलहाल अमेठी सांसद स्मृति ईरानी के निर्देश पर ना सिर्फ बीजेपी जिलाध्यक्ष दुर्गेश त्रिपाठी ने इंदौर से अमेठी पहुंची महिला रुखसाना की मदद की बल्कि अमेठी पुलिस ने महिला को राशन देने के साथ हर संभव मदद की ।जानकारी के अनुसार अमेठी के स्वास्थ्य महकमे ने भी अपना फर्ज निभाते हुए अमेठी ब्ड८ राजेश मोहन श्रीवास्तव के निर्देश पर महिला समेत परिजनों का स्वास्थ्य परीक्षण जगदीशपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर कराया जिसमे सब को स्वस्थ पाया गया फिर सबको एम्बुलेंस से उनके घर भिजवाया गया। फिलहाल ममता का फर्ज निभाने वाली अमेठी की रुखसाना बानो की कार्यशैली की हर कोई तारीफ कर रहा है।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

एएमसी कमिश्नर विजय नेहरा की कोरोना रिपोर्ट नेगेटिव

अहमदाबाद । अहमदाबाद महानगर पालिका आयुक्त विजय नेहरा कोरोना पॉजिटिव मरीज के संपर्क आने होने का कारण बताकर चार दिन पहले अचानक होम कोरन्टाइन हो गए थे। इस बीच विजय नेहरा की रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद उन्होंने कहा कि वह जल्द ही कोरोना के खिलाफ जंग में उत. रेंगेद्य शनिवार को विजय नेहरा की रिपोर्ट नेगेटिव है। फिलहाल अहमदाबाद महानगर पालिका आयुक्त का चार्ज मुकेश कुमार के पास है। बता दें कि चार दिन पहले विजय नेहरा ने कोरोना पॉजिटिव मरीज के संपर्क आने के बाद स्वयं को आइसोलेट कर लिया था। राज्य सरकार ने विजय नेहरा के स्थान पर अहमदाबाद महानगर पालिका का आयुक्त नियुक्त किया था। विजय नेहरा के स्थान पर अचानक मुकेश

आने के बारे में राज्य सरकार को जानकारी दी गईद्य देखना होगा कि राज्य सरकार उन्हें सेवा पर लौटने की कब इजाजत देती है। नई गाइडलाइन के मुताबिक विजय नेहरा की रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद उन्हें 14 दिनों तक होम कोरन्टाइन रहने की जरूरत नहीं है। हांलाकि राज्य सरकार ने विजय नेहरा को ड्यूटी पर लौटने का आदेश नहीं दिया कुमार की नियुक्ति को लेकर कई सवाल उठाए गए थेद्य गुजरातभर में कोरोना के मामलों में लगातार वृद्धि हो रही है। खासकर अहमदाबाद में कोरोना का सबसे ज्यादा असर है। गुजरात में कोरोना पॉजिटिव के अब तक 7797 केस दर्ज हो चुके हैं और उसमें 5540 केस इकलौते अहमदाबाद के हैं।

गुजरात में कोरोना वायरस के मामले बढ़कर 8 हजार के करीब हुए

अहमदाबाद । गुजरात में रविवार को कोरोना वायरस संक्रमित 398 नये मामले सामने आये हैं। इसके साथ ही राज्य में कोरोना वायरस के मामले बढ़कर 8 हजार के करीब पहुंच गये हैं। राज्य में कोरोना से अभी तक 493 लोगों की मौत हो चुकी है। गुजरात राज्य की मुख्य स्वास्थ्य ने बताया कि पिछले 24 घंटे के दौरान गुजरात में कोरोना वायरस नये 398 मामले सामने आये है। जबकि 23 लोगों की मौत हुई है। राज्य कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या 8,195 पर पहुंच गई है।

अहमदाबाद में सबसे अधिक 278 मामले सामने आये हैं। सूरत में 41, वड़ोदरा में 25, गांधीनगर में 10, राजकोट, पंचमहाल, बनासकांठा में 4, जामनगर में 3, अरवल्ली में 2 मामले सामने आये हैं।

इस बीच कोरोना संक्रमण के सबसे ज्यादा मामले में तमिलनाडु ने दिल्ली को पीछे छोड़ दिया है। रविवार को 669 नए कोरोना संक्रमित मिलने के साथ ही अब तमिलनाडु 7204 कोरोना संक्रमितों के साथ महाराष्ट्र और गुजरात के बाद तीसरे स्थान पर पहुंच गया है। बता दें कि महाराष्ट्र

कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य है। यहां 20 हजार 200 से अधिक कोरोना संक्रमित हैं और अब तक 750 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। इसके बाद गुजरात का नंबर आता है, जहां 7800 मामले हैं।

12 मई से ट्रेन चलाने की तैयारी, कल शाम 4 बजे से प्त्ब्ज्ब पर होगी बुकिंग

लॉकडाउन में वेतन का भुगतान नहीं करनेवाली कंपनियों के खिलाफ श्रम विभाग सख्त

सूरत । लॉकडाउन के दौरान शहर में अपने कर्मचारियों को वेतन नहीं देने वाली कंपनियों के खिलाफ श्रम विभाग ने सख्त रुख अपना लिया है। कर्मचारियों को वेतन नहीं देने वाले कंपनियों की श्रम विभाग सूची तैयार कर रहा है। कई कंपनियों को नोटिस भी जारी कर दी है। लॉकडाउन के चलते बंद सभी कंपनियों को अपने कर्मचारियों को वेतन देने का राज्य सरकार ने आदेश दिया है। इसके बावजूद सूरत में टेक्सटाइल और डायमंड समेत कई कंपनियों ने मार्च और अप्रैल महीने के वेतन का भुगतान नहीं किया है। वेतन नहीं मिलने से परेशान कर्मचारियों ने श्रम विभाग से शिकायत की थी। श्रम विभाग ने 120 कंपनियों की सूची तैयार की है और शुरुआत चरण में 65 जितनी डायमंड कंपनियों को नोटिस जारी की है। जिन कंपनियों ने 23 मार्च से अब तक वेतन नहीं दिया है, शहर की ऐसी तीन कंपनियों को कारण बताओ नोटिस जारी की है। नोटिस में सवाल किया गया है कि आपके खिलाफ नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट एक्ट के तहत फौजदारी कार्यवाही क्यों नहीं की जाए? लॉकडाउन के वेतन का भुगतान करने की क्या व्यवस्था की है? इसका सात दिनों के भीतर श्रम विभाग ने खुलासा मांगा हैद्य श्रम विभाग द्वारा सूरत के आकार डायमंड, जीएन ब्रदर्स और नाइन जेम्स जैसी कंपनियों को कारण बताओ नोटिर जारी करने से डायमंड उद्योग में हडकम्प मच गया है।

गुजरात के आसपास के सभी राज्य का बॉर्डर सील किया गया सूरत जाने की मंजूरी नहीं दे रहे हैं

अब हर राज्य के जिला कलेक्टर को ई–मेल किया जाएगा जिसके बाद वहां पर मंजूरी मिलने के बाद ई–मेल आएगा, उसके बाद ही सूरत से जाने की परमिशन दिया जाएगा

सूरत, गुजरात के आसपास के सभी राज्यों में अपने बॉर्डर सील कर दिया जिसके बाद में प्रवासी मजदूर और अन्य लोग जो जा रहे थे और बीच में ही अटक गए जिसके लिए जिला कलेक्टर ने बाहर जाने की परमिशन देना बंद कर दिया है जिस राज्य में जाना हो जब तक तू वहां से जिल्ला कलेक्टर का परमिशन नहीं मिलता है तब तक को किसी को यहां से जाने की परमिशन नहीं दिया जाएगा कोरोना वायरस के चलते लोग डाउन के तीसरे चरण में कोविड–19 का केस दिन–ब–दिन आंकड़ा बढ़ते जा रहा है जिसके चलते गुजरात से अन्य राज्य राजस्थान मध्य प्रदेश महाराष्ट्र का बॉर्डर सील कर दिया गया है और वहां की सरकारों से जब तक स्पष्ट सूचनाएं नहीं मिली है तब तक हमारी परमिशन ना मिले तब तक किसी को भी वहां से जाने की मंजूरी नहीं दिया जाए ! इस निर्णय की लेते ही सुरत जिला कलेक्टर ने बाहर जाने के लिए जितनी भी परमिशन दिया था सब पर रोक लगा दिया है! जितनी अर्जी अभी तक मिली हुई थी ! उस अर्जी को जब तक उस राज्य से परमिशन नहीं मिलता है तब तक जाने की परमिशन नहीं दिया जाएगा

11 मई शाम 4 बजे से IRCTC पर होगी बुकिंग 12 मई से ट्रेन चलाने की तैयारी,

भारतीय रेलवे 12 मई से पैसेंजर ट्रेन की सेवा शुरू करने की योजना बना रहा है. शुरू में 15 जोड़ी ट्रेन चलाई जा सकती है. बाद में इसे और बढ़ाने की तैयारी है. ये सभी ट्रेन स्पेशल ट्रेन होंगी जिन्हें नई दिल्ली से देश के अलग–अलग 15 हिस्सों में चलाया जाएगा. बेंगलुरु, मुंबई, रांची और पटना के लिए ट्रेन चलेंगी. दिल्ली से बेंगलुरु के लिए भी 12 मई से ट्रेन चलाने की तैयारी है.

पीयूष गोयल ने ट्वीट में लिखा है, रेलवे बारी–बारी से पैसेंजर ट्रेन चलाने के बारे में सोच रहा है. इसे 12 मई से शुरू किया जा सकता है. शुरू में 15 जोड़ी स्पेशल ट्रेन चलाई जाएंगी. ये ट्रेन

Piyush Goyal @PiyushGoyal · 2h

Railways plans to gradually restart passenger train operations from 12th May, 2020, initially with 15 pairs of special trains connecting New Delhi with major stations across India. Booking in these trains will start at 4 pm on 11th May.

pib.gov.in/PressReleseDet...

2.4K 4.8K 18.8K

लिए स्पेशल ट्रेन चलाने की तैयारी है. रेल मंत्री पीयूष गोयल ने ट्वीट कर इस बात की जानकारी दी है. इस योजना के तहत दिल्ली से 15 शहरों के नई दिल्ली से शुरू होंगी और देश के अलग–अलग स्टेशनों तक जाएंगी. स्पेशल ट्रेन की बुकिंग 11 मई दिन सोमवार से 4 बजे शाम से शुरू होगी.

सूरत से जाने वाली 9 ट्रेनें मैं से सिर्फ दो ट्रेनों को जाने की मंजूरी उत्तर प्रदेश सरकार ने दिया

7 ट्रेनों को रद्द कर कर स्थानीय प्रशासन में मचा हड़कंप

गुजरात से 1259 मजदूरों को लेकर पहुंची श्रमिक स्पेशल ट्रेन

अलीगढ़ (ईएमएस)। कोरोना महामारी के चलते देशभर में हुए लॉकडाउन के बीच गुजरात के दाहोद के 1259 श्रमिक थे।एडीएम सिटी राकेश कुमार मालपाणी ने बताया कि गुजरात में लॉकडाउन के

थर्मल स्क्रीनिंग के बाद किया रवाना

में फंसे उत्तर प्रदेश के करीब 50 जनपदों के 1259 श्रमिकों को लेकर श्रमिक स्पेशल ट्रेन लीगढ़ जंक्शन रेलवे स्टेशन पहुंची। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए श्रमिकों की थर्मल स्क्रीनिंग की गई। इसके बाद उन्हें खाद्य सामग्री उपलब्ध कराई और फिर उन्हें रोडवेज बसों के जरिये उनके घर भेजा जा रहा है।जिले के आला अधिकारी अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ श्रमिकों को खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के साथ घर भेजने की तैयारी में जुटे रहे। गुजरात से लौटे श्रमिकों ने खुशी का इजहार करते हुए प्रदेश सरकार को धन्यवाद दिया।गुजरात के दमोह से चलते फंसे मजदूरों को प्रदेश सरकार के आह्वान पर गुजरात सरकार ने स्पेशल ट्रेन से भेजा है। इन सभी मजदूरों का ट्रेन के अलीगढ़ जंक्शन पर उतारने के बाद सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए स्वास्थ्य विभाग की टीमों द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

गुजरात से लगभग 1300 प्रवासी यात्रियों को रेलवे स्टेशन अलीगढ़ पहुँची ट्रैन के सम्बन्ध में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मुनिराज द्वारा कोविड–19 के संक्रमण से बचाव हेतु स्टेशन पर यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था, मेडिकल चैकअप, सोशल डिस्टेंसिंग आदि का निरीक्षण कर नियमानुसार यात्रियों को बस में

रविवार सुबह 7:30 बजे श्रमिक स्पेशल ट्रेन अलीगढ़ पहुंची। इस ट्रेन में अलीगढ़, कासगंज, बदायूं आगरा, गोरखपुर, महाराजगंज सहित प्रदेश के 50 जनपदों बैठाकर उनके गंतव्य गृह जनपद भेजा गया। इस दौरान सभी सम्बन्धित प्रशासनिक/मेडिकल स्टॉफ, पुलिस/रेलवे अधिकारी/कर्मचारीगण मौजूद रहें।

देशभर में रेलवे ने चलाई 366 'श्रमिक स्पेशल' ट्रेनें, यात्रियों को मिला रहा मुफ्त भोजन और पानी

नई दिल्ली (ईएमएस)। विभिन्न स्थानों पर फंसे प्रवासी श्रमिकों, तीर्थयात्रियों, पर्यटकों, विद्यार्थियों और अन्य व्यक्तियों की आवाजाही विशेष रेलगाड़ियों से सुनिश्चित करने के संबंध में गृह मंत्रालय का आदेश प्राप्त होने के बाद भारतीय रेलवे ने 'श्रमिक स्पेशल' ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया था। 10 मई 2020 (1500 बजे) तक देश भर के विभिन्न राज्यों से कुल 366 'श्रमिक स्पेशल' ट्रेनें चलाई गई हैं, जिनमें से 287 (2 ट्रेनें), उत्तर प्रदेश (127 ट्रेनें), पश्चिम बंगाल (2 ट्रेनें)। इन ट्रेनों ने प्रवासियों को कई शहरों तक पहुंचाया है जिनमें तिरुचिरापल्ली, टिटलागढ़, बरौनी, खंडवा, जगन्नाथपुर, खुर्दा रोड, प्रयागराज, छपरा, बलिया, गया, पूर्णिया, वाराणसी, दरभंगा, गोरखपुर, लखनऊ, जौनपुर, हटिया, बस्ती, कटिहार, दानापुर, मुजफ्फरपुर, सहरसा, इत्यादि शामिल हैं। इन 'श्रमिक स्पेशल' ट्रेनों से अधिकतम लगभग 1200 यात्री ही

ट्रेनें अपने गंतव्य तक पहुंच भी चुकी हैं, जबकि 79 ट्रेनें फिलहाल अपने–अपने गंतव्यों की ओर तेज गति से अग्रसर हैं। इन 287 ट्रेनों का परिचालन विभिन्न राज्यों में पहुंचने पर समाप्त हुआ, जैसे कि आंध्र प्रदेश (1 ट्रेन), बिहार (87 ट्रेनें), हिमाचल प्रदेश (1 ट्रेन), झारखंड (16 ट्रेनें), मध्य प्रदेश (24 ट्रेनें), महाराष्ट्र (3 ट्रेनें), ओडिशा (20 ट्रेनें), राजस्थान (4 ट्रेनें), तेलंगाना 'सामाजिक दूरी बनाए रखने के नियम' का बाकायदा पालन करते हुए सफर कर सकते हैं। इसी तरह ट्रेन में चढ़ने से पहले यात्रियों की समुचित स्क्रीनिंग या जांच सुनिश्चित की जाती है। एक और खास बात यह भी है कि इन 'श्रमिक स्पेशल' ट्रेनों से सफर के दौरान यात्रियों को मुफ्त भोजन और पानी दिया जाता है।

सुरत से उतरप्रदेश से प्रयागराज जाने वाली ट्रेन बीच में रुकी

सुरत से श्रमिक ट्रेन में प्रवासी मजदूरों को लेकर निकली थी यह ट्रेन 20 डब्बे पीछे छुट जाने पर लोग फँसे रस्ते में ट्रेन का ईजन तीन बोगी के साथ अलग होकर निकल गया।गार्ड ने दी स्टेशन मास्टर को जानकारी दिया

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर, सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/751000 (Subject to Surat jurisdiction)